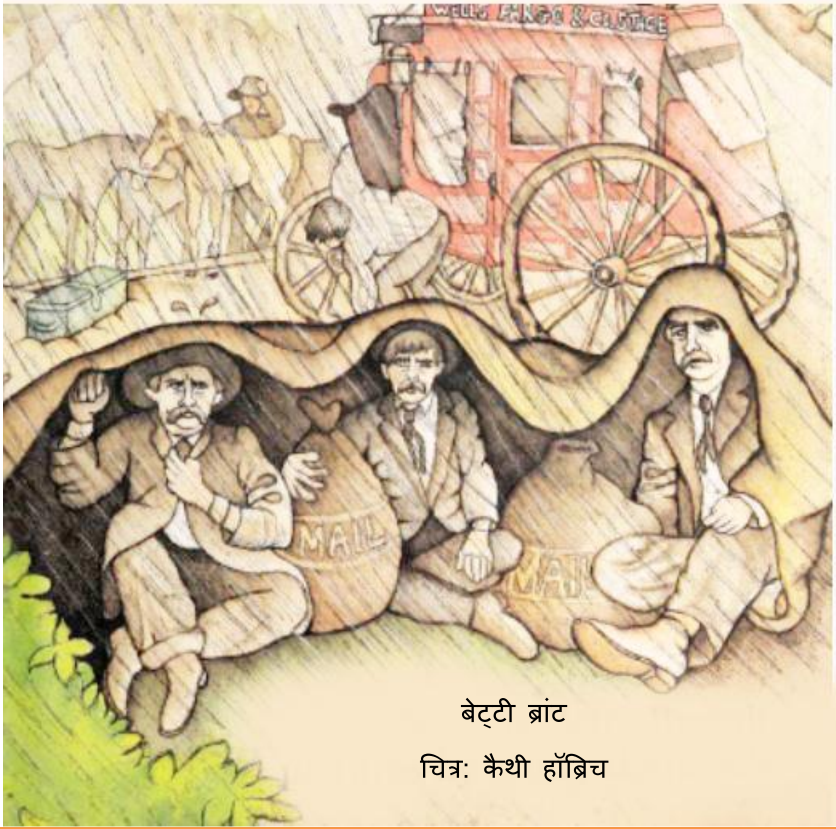
डाक आप तक कैसे पहुँचती है?



बेट्टी ब्रांट

चित्र: कैथी हॉब्रिच

विशेष डाक

क्या होगा अगर एक कबूतर आपका पत्र पहुंचाए? आपको वो मजेदार लग सकता है, लेकिन वो निश्चित रूप से कुछ समस्याएं पैदा करेगा! आपको कबूतर को हर बार अपने घर में दाना-पानी देना पड़ेगा, और कभी-कभी आकाश हजारों पक्षियों से भर जाएगा क्योकि सभी घरों के लिए पत्र होंगे.

बहुत समय पहले, वाकई में कबूतरों को संदेश भेजने के लिए इस्तेमाल किया जाता था. तब से, डाक को कई अन्य तरीकों से डिलीवर किया गया है. पाठक अमेरिका में डाक सेवा के इतिहास के इस जीवंत रूप का ज़रूर आनंद लेंगे.



डाक आप तक कैसे पहुँचती है?



क्या होगा अगर एक कबूतर आप तक पत्र पहुंचाए?

आपको वो मजेदार लग सकता है.

लेकिन कबूतर द्वारा डाक पहुंचाना तमाम समस्यायें भी पैदा कर सकता है.

आपको कबूतर को हर बार अपने घर में दाना-पानी देना पड़ेगा.

कबूतर को उतरने के लिए किसी विशेष स्थान की आवश्यकता होगी.

आकाश हजारों पक्षियों से भर जाएगा क्योंकि तमाम लोगों के पत्र होंगे.

एक समय था जब वाकई में कबूतरों का इस्तेमाल सन्देश भेजने के लिए किया जाता था.

लेकिन आज अमरीकी डाक सेवा डाक, तेज़ और बेहतर तरीके से मेल वितरित करती है.



डाक की डिलीवरी हमेशा तेज और सुरक्षित नहीं थी.

अमरीका में दूसरे देशों से आए बहुत से लोग अपने वतन में दोस्तों और रिश्तेदारों को याद करते थे.

उनके लिए संपर्क में रहने के लिए पत्र लिखना ही एकमात्र जरिया था.

अमेरिका में पहला डाकघर 1639 में खुला.

वो मैसाचुसेट्स में था.

विदेशों से आए लोग देश के विभिन्न भागों में बस गए.

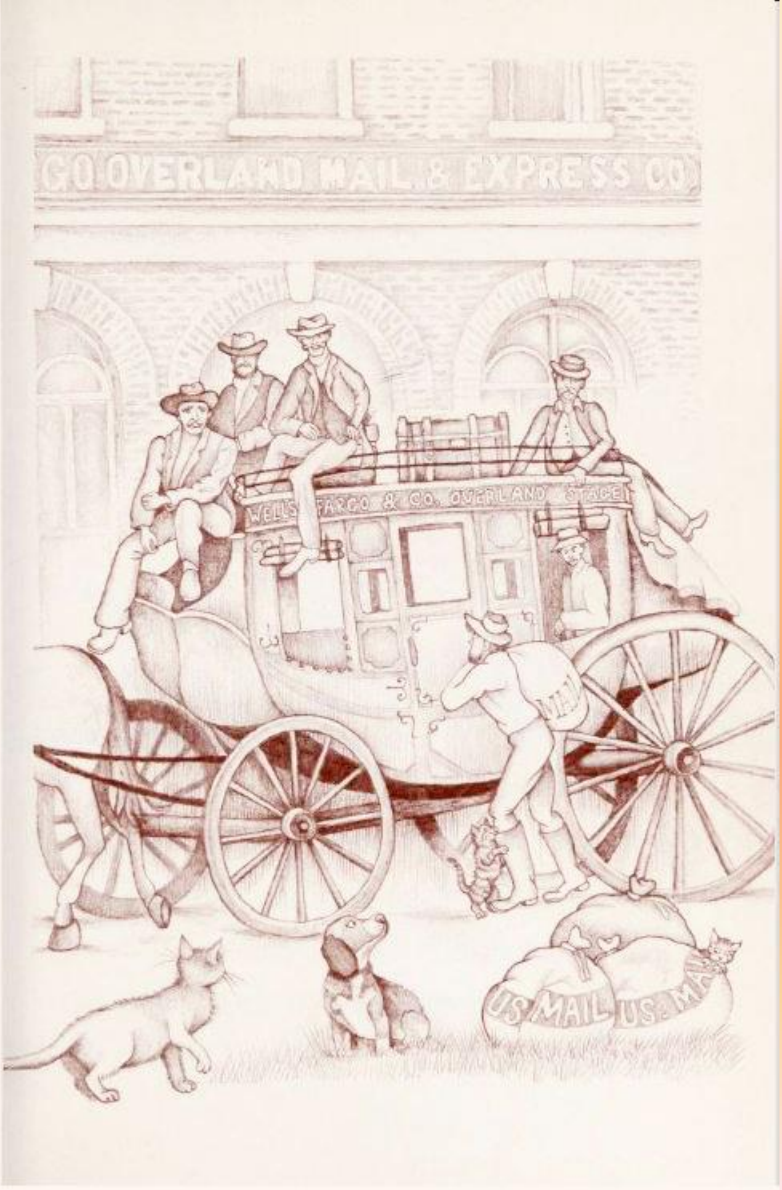
नए डाक रूट स्थापित किए गए.

स्टेजकोच, डाक को एक शहर से दूसरे शहर ले जाते थे.

लेकिन स्टेजकोच द्वारा डाक पहुंचाना आसान नहीं था.

सड़कें बहुत कम थीं.

उबड़-खाबड़ जमीन पर केवल खतरनाक रास्ते थे.







जब बारिश होती तो स्टेजकोच अक्सर कीचड़ में फंस जाते थे.

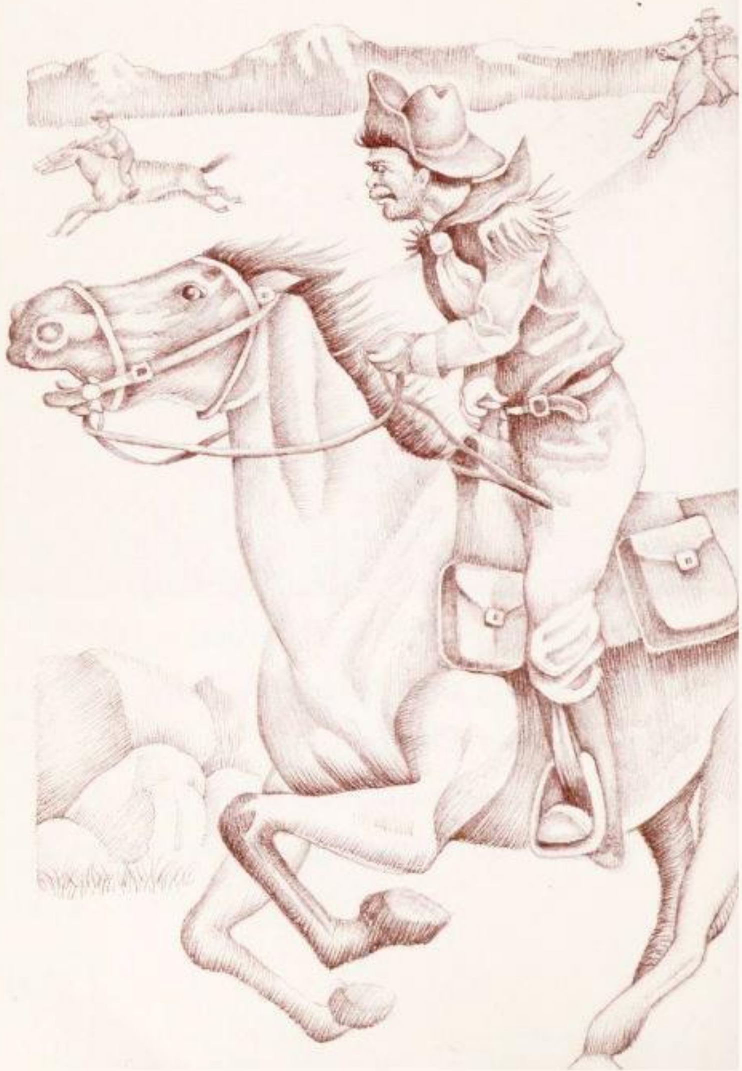
कभी-कभी स्टेजकोच के पहिए टूट जाते थे.

पत्र भेजने और उत्तर प्राप्त करने में तीन सप्ताह से अधिक का समय लग सकता था.

कुछ लोग पश्चिम में बस गए.

ईस्ट कोस्ट से देश के दूसरे भागों में पत्र भेजने में काफी समय लगता था.

इसलिए 1860 में पोनी-एक्सप्रेस (यानि टट्टू-एक्सप्रेस) शुरू हुई.



पोनी-एक्सप्रेस, अमेरिका की पहली तेज़ डाक सेवा थी.

घुड़सवार डाक को, घोड़े की पीठ पर ढोते थे.

वे मिसौरी से कैलिफ़ोर्निया तक के रास्ते में सवारी करते थे.

वे देश के सबसे तेज घोड़ों का इस्तेमाल करते थे.

घुड़सवार, डाक को चमड़े के थैलों में रखते थे.

थैले उनकी काठी से बंधे होते थे.

एक घुड़सवार 10 से 25 मील की अधिकतम गति से चलता था.

इसके बाद वो पोनी-एक्सप्रेस स्टेशन पर पहुंचते थे.

वहां एक नया घोड़ा, आगे की यात्रा के लिए उनकी प्रतीक्षा कर रहा होता था.

बस दो मिनट में घुड़सवार, घोड़ा बदलतता था और फिर से अपने रास्ते पर चल पड़ता था.

प्रत्येक घुड़सवार लगभग 75 मील की दूरी तय करता था.

उसके बाद एक नया घुड़सवार कमान संभालता था.

पोनी-एक्सप्रेस, 10 दिनों में लगभग 2,000 मील दूर तक डाक ले जा सकती थी.



पोनी-एक्सप्रेस की सवारी करना खतरे से भरा होता था.

कभी-कभी घुड़सवारों को लूट लिया जाता था.

सबसे प्रसिद्ध पोनी-एक्सप्रेस घुड़सवार, बफ़ेलो बिल कोडी था.

वो बहुत बहादुर और बहुत होशियार था.

लुटेरों को बरगलाने के लिए कोडी, असली डाक को एक थैले में डाल देता था.

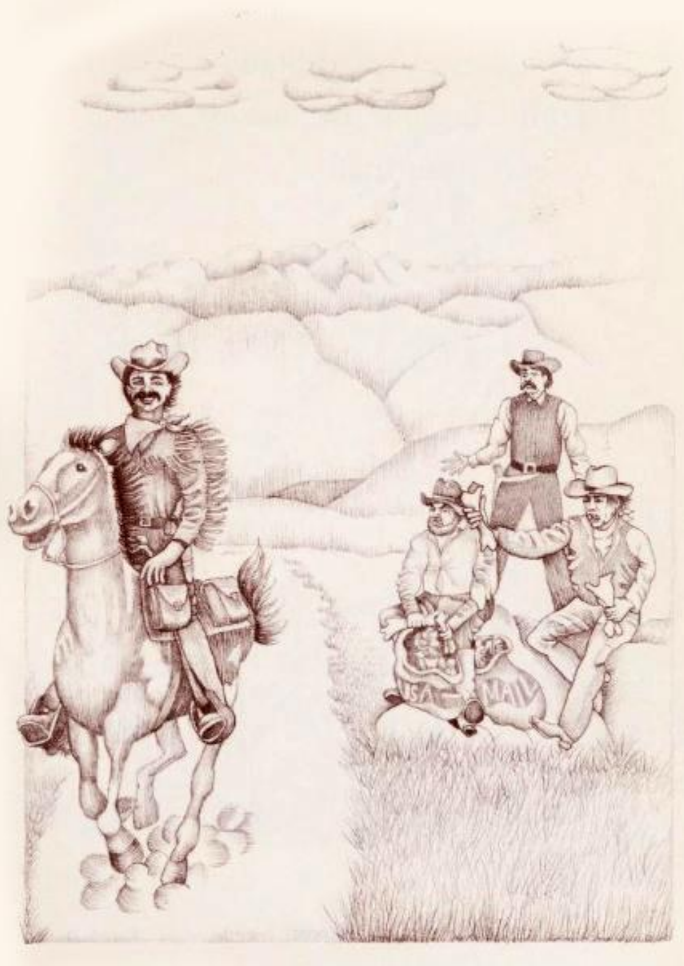
और उस थैले को अपनी काठी के नीचे छिपा लेता था.

फिर वो एक दूसरा थैला फ़ालतू कागज से भर देता था.

वो दूसरे थैले को दिखाई देने के लिए अपनी काठी से लटकता था.

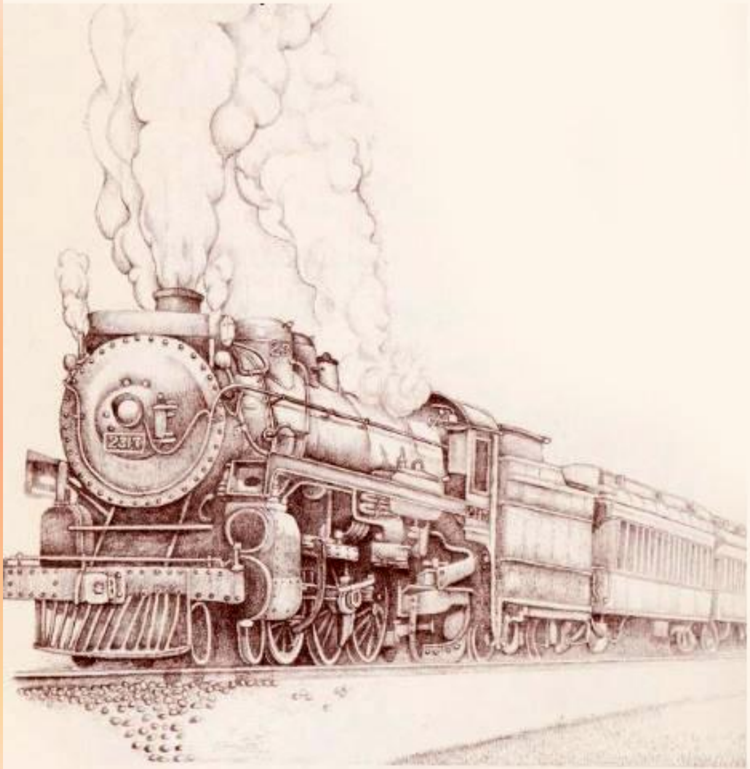
लुटेरे उसे रोकने के बाद कागज़ों से भरा थैला लेते थे.

इससे पहले कि वे थैला खोल कर देखते, कोडी डाक लेकर चंपत हो जाता था.



1800 के अंत में, अमरीका में पूर्व तट से पश्चिम तट तक रेलमार्ग बनाए गए.

फिर डाक ले जाने के लिए ट्रेनें सबसे तेज़ तरीका बन गईं.





ट्रेन, विशेष रेल डिब्बों को खींचती थीं जिनमें डाक क्लर्क, मेल को छांटते थे.

प्रत्येक छोटे शहर में ट्रेनें नहीं रुकती थीं.

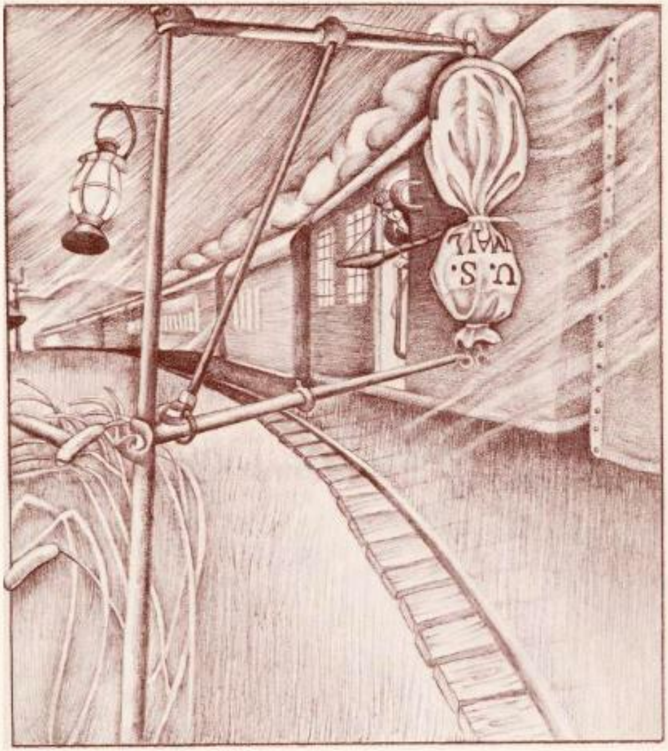
लेकिन हरेक शहर से डाक उठाई और वहां पहुंचाई जाती थी.

प्रत्येक शहर में डाक की बोरी को एक खंभे से लटकाया जाता था.

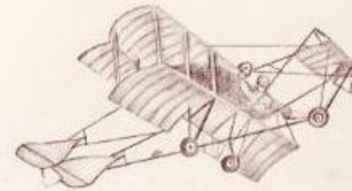
ट्रेन चलते समय एक डाक क्लर्क इस बोरी को पकड़ लेता था.

क्लर्क एक विशेष उपकरण का इस्तेमाल करता था जिसे "कैचिंग आर्म" कहा जाता था, जो रेलगाड़ी से जुड़ा होता था.

उसी समय एक अन्य क्लर्क उस शहर की डाक बोरी को चलती ट्रेन से नीचे फेंक देता था.



1911 तक डाक पहुंचाने के लिए हवाई जहाजों का इस्तेमाल किया जाने लगा.



पहली एयरमेल उड़ानें बहुत जोखिम भरी थीं.

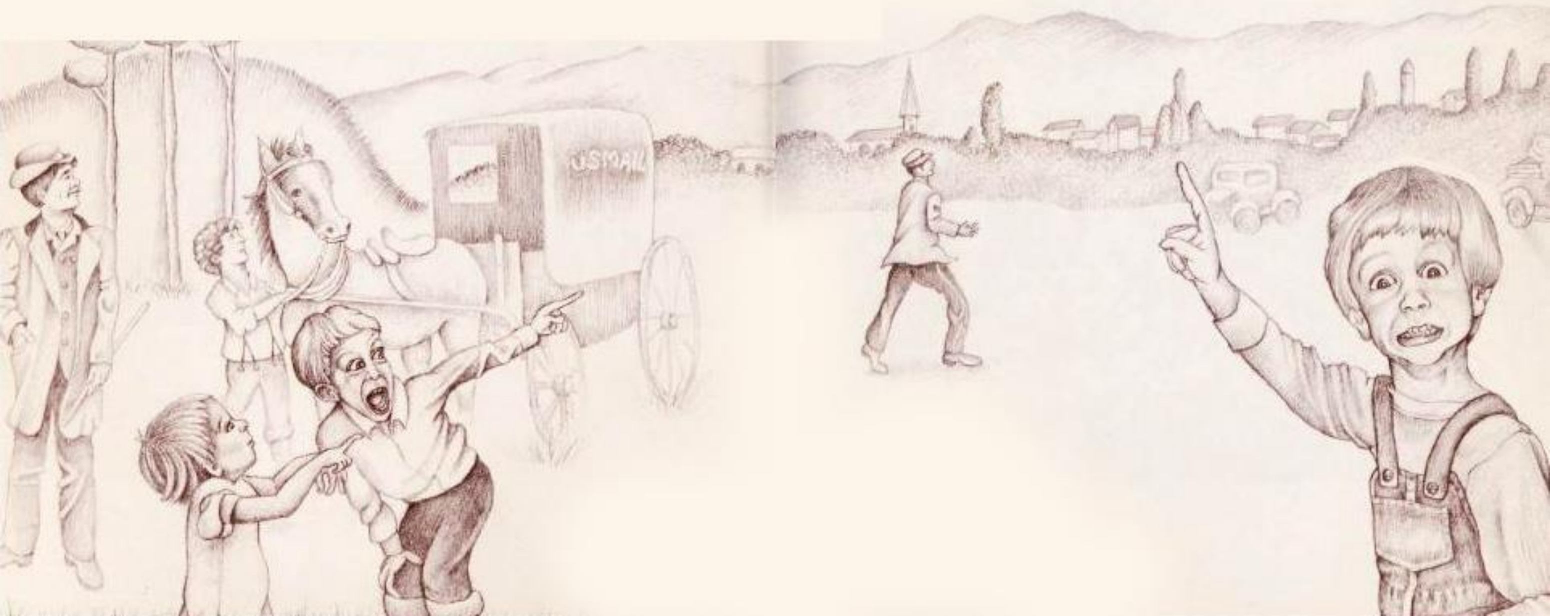
पोनी-एक्सप्रेस घुड़सवारों की तरह ही पायलटों को भी बहादुर और स्मार्ट होना पड़ता था.

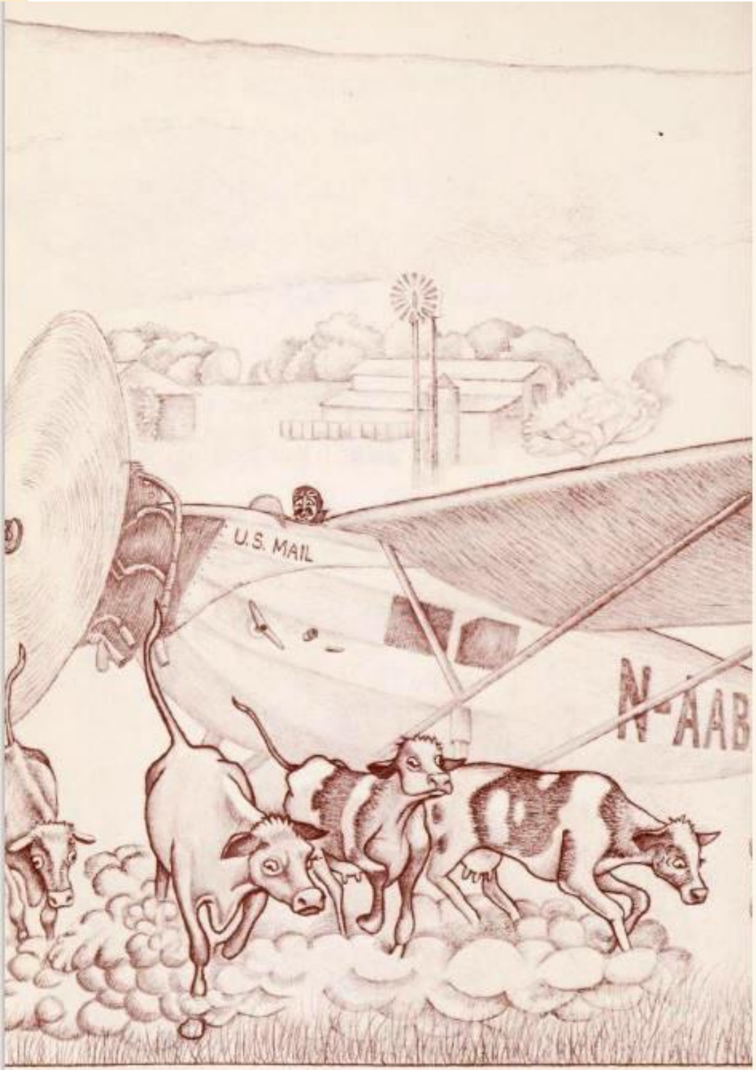
कभी-कभी खराब मौसम में पायलट अपना रास्ता भटक जाते थे.

कभी-कभी विमानों में ईंधन खत्म हो जाता था.

फिर पायलटों को जल्दी से उतरने के लिए कोई खाली जगह तलाशनी पड़ती थी.







अक्सर डाक विमानों को किसानों के खेतों में उतरना पड़ता था.

जब ऐसा होता तो पायलट उम्मीद करते थे कि गायें उनके रास्ते से हट जाएँ!

शुरू में मेल उड़ानें केवल शहरों के बीच, कम दूरी ही तय करती थीं.

लेकिन जल्द ही हवाई जहाज डाक को, एक राज्य से दूसरे राज्य और फिर पूरे देश में ले जाने लगे.

हवाई जहाजों ने विदेशों में भी डाक पहुंचाई.

1800 के अंत तक, पहाड़ों में रहने वाले लोगों - किसानों, पशुपालकों आदि के लिए डाक मिलना मुश्किल थी.

शहरों में डाक लोगों के घरों तक पहुँचाई जाती थी.

पर गांव में रहने वाले लोगों को अपने पत्र और पैकेज लेने के लिए विशेष रूप से शहर जाना पड़ता था.

1896 में देश में डाक मार्ग स्थापित किए गए.

इस डाक सेवा को रूरल फ्री डिलीवरी या RFD कहा जाता था.

पर गांवों तक डाक पहुंचाना आसान नहीं था.

डाक वाहकों को बर्फ और कीचड़ में से होकर यात्रा करनी पड़ती थी.



कई बार उनकी गाडियां फंस जाती थीं.

कभी-कभी उनकी कारों के टायर पंचर हो जाते थे.

कभी-कभी वे खराब बर्फीले तूफान में फंस जाते थे और उन्हें पूरी रात अपनी कारों में ही रुकना पड़ता था.

लेकिन डाक वाहक को पता था कि प्रतीक्षारत लोगों के लिए उनकी डाक कितनी महत्वपूर्ण थी.

कोई पशुपालक, समाचार पत्र प्राप्त करने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा होता था.

अख़बार में मवेशियों के लिए एक नए टीके के बारे में कोई लेख हो सकता था.

शायद एक छोटी किसान लड़की अपनी गुड़िया की प्रतीक्षा करती हो, जिसे उसके माता-पिता ने किसी कैटलॉग से ऑर्डर किया था.

रूरल फ्री डिलीवरी ने यह सुनिश्चित किया कि लोगों को उनकी डाक मिले, चाहे वे देश में कहीं भी रह रहे हों.



लेकिन डाक वितरण का तरीका पिछले कुछ वर्षों में बदल गया है.

साथ में डाक की फीस अदा करना का तरीका भी बदल गया है.

जब शुरू में डाक सेवा शुरू हुई, तब डाक टिकट नहीं थे.

लोग अपने पत्र, पोस्ट ऑफिस में ले जाते थे.

फिर क्लर्क उनके पत्र में कितने पन्ने थे, वो गिनता था.

फिर उस व्यक्ति को प्रत्येक पन्ने के हिसाब से एक निश्चित राशि का भुगतान करना पड़ता था.





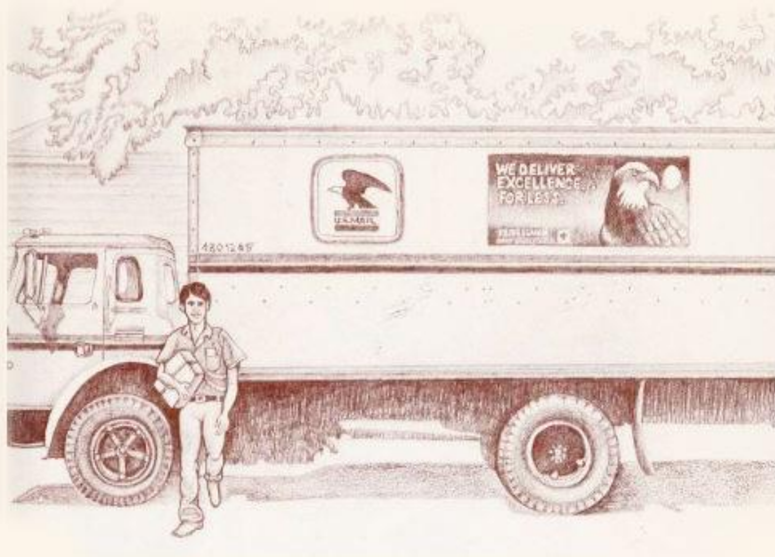
चिपकाने वाले टिकटों का अमेरिका में पहली बार 1847 में उपयोग किया गया.

लेकिन अब डाक टिकट खरीदकर उन्हें लिफाफे पर चिपकाना ही पत्र भेजने का एकमात्र तरीका नहीं है.

हम अन्य कई तरीकों से भी अपने सन्देश भेज सकते हैं.

विशेष पत्र, ख़ास डाकियों द्वारा, अतिरिक्त शुल्क देने पर वितरित किए जाते हैं.

जब लोग मूल्यवान वस्तुएँ डाक से भेजते हैं, तो वे उन्हें पंजीकृत डाक से भेजकर उनकी रक्षा कर सकते हैं.

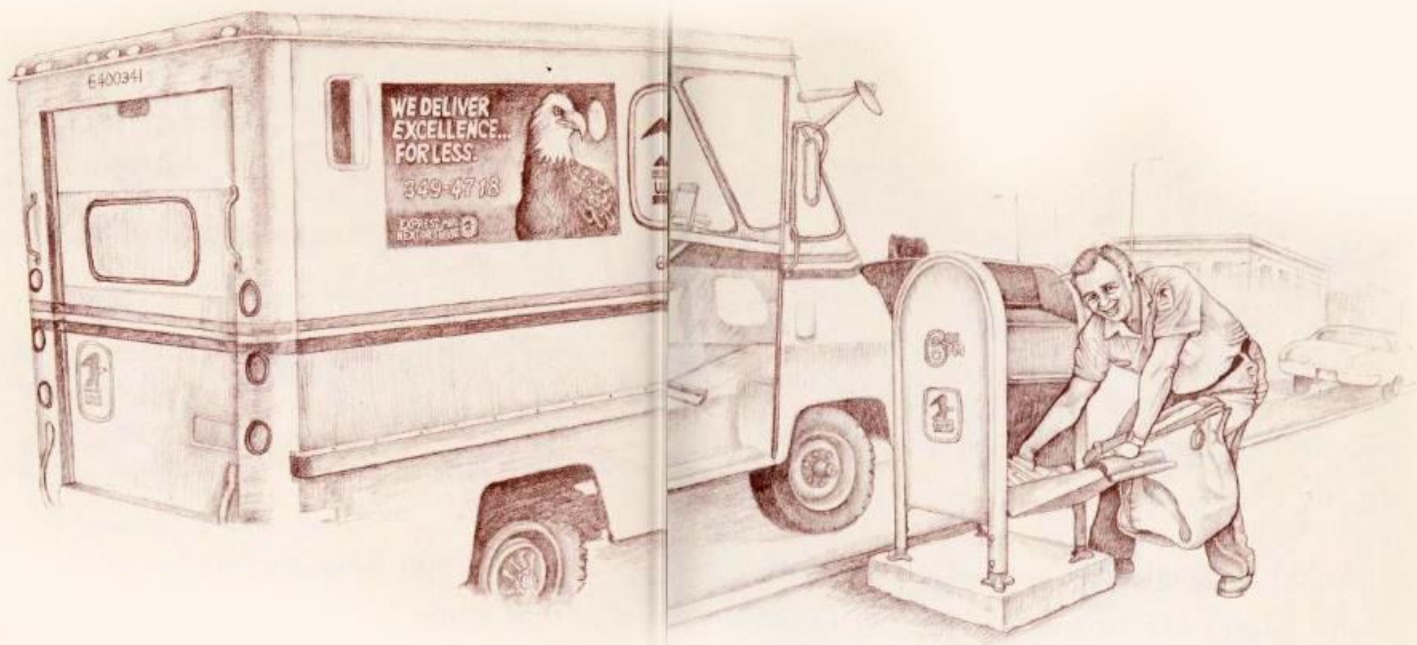


हो सकता है कि आपको कोई पैकेज मिला हो जो C.O.D हो.

सी.ओ.डी. यानी कैश ऑन डिलीवरी या कलेक्ट ऑन डिलीवरी.

इसका उपयोग तब किया जा सकता है जब आप किसी स्टोर या कैटलॉग से कुछ ऑर्डर करते हों.

आप पैकेज का भुगतान, डिलीवरी के समय कर सकते हैं.



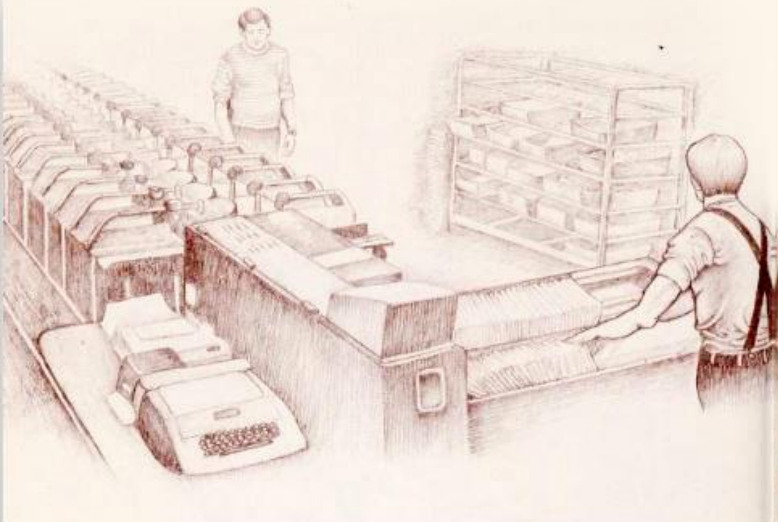
आज हम टेलीफोन और कंप्यूटर द्वारा संदेश भेज सकते हैं.

हम उपग्रह द्वारा भी, दुनिया भर में कहीं भी संदेश भेज सकते हैं.

लेकिन हम अभी भी अपनी अधिकांश मेल के लिए डाक सेवा पर ही निर्भर करते हैं.

आज डाक, मुख्य रूप से ट्रकों या हवाई जहाजों द्वारा ले जाई जाती है.

डाक पेटी में पत्र डालने के बाद, उन्हें डाकघर ले जाया जाता है.





डाकघर में पत्रों को उनके आकार के अनुसार छांटा जाता है.

फिर पत्रों पर लगे टिकटों को कैंसिल या रद्द किया जाता है.

टिकटों पर काली स्याही की मोहर लगाई जाती है जिससे उस टिकट का दुबारा उपयोग न हो.

उसके बाद पत्रों को उनके ज़िप कोड (या पिन कोड) के आधार पर छांटा जाता है.

200 मील से अधिक दूर जाने वाली अधिकांश डाक हवाई मार्ग से जाती है.

ट्रक, डाक को एयरपोर्ट ले जाते हैं.

फिर डाक देश भर के विभिन्न शहरों में हवाई जहाज़ों द्वारा ले जाई जाती है.

ट्रक बाकी डाक को स्थानीय डाकघरों तक ले जाते हैं.

वहां से, डाकिए इसे लोगों के मेलबॉक्स में डिलीवर करते हैं.







इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि डाक कैसे यात्रा करती है, डाक सेवा हमारे पत्रों को जल्दी-से-जल्दी पहुँचाने का प्रयास करती है.

पत्र पाकर हम सभी लोग खुश होते हैं!

समाप्त